परिवर्तन
PARIVARTAN
समेकित ग्रामीण समुदाय विकास हेतु तक्षशिला की पहल

हमार अंगना

तक्ष शिला

अंक 8 | विशेषांक | पूर्व-स्कूल एवं अनौपचारिक शिक्षा पर परिवर्तन के प्रयासों का संकलन, आँगनबाड़ी केन्द्रों के लिए | सितम्बर 2019–अगस्त 2020

सम्पादकीय

प्रिय पाठकों,

परिवर्तन बालघर आंगन द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका हमार अंगना के विशेष अंक में, मैं आपका स्वागत करती हूँ।
बालघर आँगन परिवर्तन की शिक्षा इकाई की उप इकाई है, जो कई वर्षो से लगातार आंगनवाड़ी केंद्र के साथ 3-6 वर्ष तक के बच्चों और सेविकाओं से जुड़कर काम कर रही है। बालघर का उदेश्य है कि बच्चों को खेल-खेल, कविता, कहानी, के माध्यम से शारीरिक, मानसिक एवं भाषा का ज्ञान कराया जा सके।

बच्चों के साथ हमने काम किया है और यह देखा है कि ज्यादातर बच्चे टीके और इंजेक्शन के डर के कारण आंगनवाड़ी केंद्र पर जाने से एवं सेविकाओं के साथ बात करने से डरते हैं क्योंकि बचपन में उन्हें जो भी टीके लगे होते हैं वे आंगनवाड़ी केंद्र पर ही लगे होतें हैं । ऐसे में उन्हें लगता है कि यह जगह केवल टीका लगाने के लिए ही है, अगर हम जायेंगे तो टीके लग जायेंगे। पर पिछले दिनों, परिवर्तन की टीम के सहयोग से बच्चों की इस अवधारणा को दूर करने में मदद मिली है। उन्हें केंद्र पर पहुँचाने एवं खेल- खेल में नयी- नयी जानकारियों से रूबरू करवाने का प्रयास किया गया है साथ ही साथ बच्चों का जुड़ाव केंद्र से कैसे बेहतर हो सकता है इसका भी प्रयास किया गया है। पत्रिका के इस अंक में हम पिछले वर्ष की गतिविधियों की एक छोटी सी झलक पेश कर रहे हैं, साथ ही साथ कोविड महामारी के दौरान शिक्षा के क्षेत्र में की गयी पहल को आप सभी के साथ साझा कर रहे हैं।

यह पत्रिका आंगनवाड़ी से जुड़े बच्चो, अभिभावकों और सेविकाओं के योगदान और सहयोग से बनी है। परिवर्तन की पूरी टीम की ओर से मैं आप सभी को धन्यवाद देती हूँ और आशा करती हूँ कि हमारी यह कोशिश आप सभी को पसंद आएगी। आप अपनी प्रतिक्रिया हमारे साथ ज़रूर साझा करें।

सप्रेम
मधुबाला देवी,
फैसिलिटेटर, बालघर आंगन, परिवर्तन

खाली समय में बच्चे सीखेँ नये कौशल

कोरोना वायरस के संक्रमण को देखते हुए राज्य सरकार के आदेशानुसार सभी विद्यालयों, आंगनवाडी केंद्रों तथा सभी प्रकार के शैक्षणिक संस्थानों के बंद हो जाने से घर में बच्चे बैठ के ऊब महसूस करने लगे। अभिभावकों की प्रतिक्रिया भी मिलती रही कि घर में रह रहे बच्चे ज्यादा शरारत कर रहे हैं एवं कुछ सीख भी नहीं पा रहे हैं। चूंकि इस बंदी के प्रारंभिक दिनों में परिवर्तन के आस-पास के क्षेत्र में कोरोना का संक्रमण नहीं था ऐसे में घर बैठे बच्चों के लिए परिवर्तन परिसर में एक गतिविधि शिविर का आयोजन किया

गया ताकि बच्चे घर में बेकार बैठने के बजाय खेल- खेल के माध्यम से परिवर्तन आकर नई- नई गतिविधियों को सीख सकें। बालघर आँगन के छोटे छोटे बच्चों को समुदाय से लाने के लिए परिवर्तन द्वारा गाड़ी की व्यवस्था की गयी जो बच्चों को उसके घर से लाकर फिर वापस घर छोड़ती थी, ताकि बच्चों को किसी भी प्रकार की परेशानी का सामना नहीं करना पड़े। इस शिविर में बच्चों के साथ कविता, कहानी और बालगीत वाचन के साथ-साथ अलग- अलग गतिविधियां कराई गईं।

बच्चों की पसंद

बच्चो के सम्पूर्ण विकास के लिए परिवर्तन परिसर में बालघर आंगन का निर्माण किया गया। जिसमें कविता, कहानी, व्यायाम, आकार परिवार तथा बॉयोस्कोप की सहायता से बच्चों के सम्पूर्ण विकास का भरपूर प्रयास किया जाता है। इन सभी क्रियाकलापों को बच्चे बहुत पसंद करते है। परिवर्तन परिसर में बच्चों के लिए एक टायर ग्राउंड का निर्माण किया गया है जिसे बच्चे सबसे ज्यादा पसंद करते है। इसके अलावा कृषि से जुड़ी छोटी- छोटी गतिविधियों के प्रति भी बच्चे बहुत उत्सुक रहते हैं जैसे मौसमी सब्जी, गोभी,टमाटर, आलू लगाना और इन सब पौधों में मग से पानी देना बच्चे बहुत पसंद करते है।

आंगनवाडी सेंटर पर पोषाहार में सुधार

पोषाहार अंगानवाड़ी के कार्यो की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। बालघर आँगन द्वारा इस वर्ष केन्द्रों के साथ पोषाहार पर विशेष काम करने के लिए अपने कार्यक्षेत्र के 4 आंगनवाडी केंद्रों का चयन किया गया है, ये ऐसे केंद्र हैं जहाँ की स्थिति किसी कारणवश अच्छी नहीं है। चूंकि हमारा जुड़ाव कम समय का है फिर भी हमारा प्रयास है कि दो चरणों के सर्वे के माध्यम से उन केन्द्रों को एक आदर्श केंद्र बनाया जा सके ताकि सरकार द्वारा आंगनवाडी केन्द्रों हेतु निर्धारित किये गए पोषाहार और अन्य सुविधाओं से बच्चे लाभान्वित हो पायें।

हमारी टीम द्वारा जिन चार आंगनवाड़ी केन्द्रों का चयन किया गया एवं उनके साथ लगातार काम किया गया उसकी संक्षिप्त डाटा आधारित रिपोर्ट इस प्रकार से है:

दिसम्बर से मार्च तक पोषाहार का आँकलन

समस्या	बेस लाईन सर्वे	मिडलाईन सर्वे
केंद्र पर नियमित भोजन बनता है की नहीं ?	बेस लाईन सर्वे में 4 केन्द्रों में से 2 ही केन्द्रों पर भोजन बनते हुए मिला।	मिडलाईन सर्वे में 4 केन्द्रों में से 3 केन्द्रों पर भोजन बनते हुए मिला।
मात्रा के हिसाब से बच्चों को भोजन मिलता है की नहीं ?	बेस लाईन सर्वे में 4 केन्द्रों में से 1 ही केंद्र पर मात्रा के हिसाब से भोजन मिलते हुए पाया गया	मिडलाईन सर्वे में 4 केन्द्रों में से 2 ही केंद्र पर मात्रा के हिसाब से भोजन मिलते हुए पाया गया
बच्चों को भोजन करने के लिए पोषाहार किस पात्र में दिया जाता है ?	बेस लाईन सर्वे में 4 केन्द्रों में से 1 ही केन्द्र पर बच्चों को पोषाहार देने हेतु भोजन का पात्र मिलता था। बाकी केन्द्रों पर बच्चे अपने घर से पात्र ले कर आते थे।	मिडलाईन सर्वे में 4 केन्द्रों में से 2 केन्द्रों पर बच्चों को भोजन का पात्र मिला था। बाकी केन्द्रों पर बच्चे अपने घर से पात्र ले कर आते थे।
भोजन बनाने का स्थान साफ-सुथरा है की नहीं ?	बेसलाईन सर्वे में 4 केन्द्रों में से 2 ही केन्द्रों पर पर रसोई घर साफ-सुथरा पाया गया।	मिडलाईन सर्वे में 4 केन्द्रों में से 4 केन्द्रों पर रसोई घर साफ-सुथरा पाया गया।

बेसलाईन सर्वे में समस्या कुछ ज्यादा थी जैसे – समय पर भोजन नहीं बनाना, भोजन के पात्र का सही उपयोग नहीं होना। इन्हीं सब समस्यायों पर काम किया गया जिसमें पाया गया कि परिवर्तन के निरंतर प्रयास से बेस लाईन से मिड लाईन में काफी सुधार आया है। लॉक डाउन के चलते सारे आंगनवाड़ी केंद्र अभी बंद हैं जिसकी वजह से एंडलाइन सर्वे नहीं हो पाया। जैसे ही केंद्र खुल जाते हैं इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाया जायेगा।

हमारी प्रमुख कार्यशालायें

बालघर आँगन द्वारा इस सत्र में कई कार्यशालाएं आयोजित की गईं- जिसमें गुनगुन कार्यशाला, नन्हे कदम, खेल खेल में ज्ञान अवलोकन एवं सेविका प्रशिक्षण प्रमुख कार्यशालाएं रहीं।

सेविका प्रशिक्षण 2019 -सेविकाओं को सुदृढ़ करने की एक पहल सेविकाओं, सहायिकाओं को नयी-नयी गतिविधियों से अवगत कराते हुए, इस साल के सेविका प्रशिक्षण में डीपीएस पटना की शिक्षिकाओं ने कुछ नई गतिवातिधियां सिखाईं। इन गतिविधियों को सीख कर सेविकाएं अपने केंद्र के बच्चों को और बेहतर ढंग से इसका लाभ दे पाएं, यही हमारी कोशिश है।

कार्यशाला में भाग लेने वालों कि उपस्थिति सूचि

दिनांक	स्थान	सेविका
27/9/19	परिवर्तन परिसर	24
28/9/19	परिवर्तन परिसर	34

सेविका प्रशिक्षण से लाभान्वित होकर सेविकाओं को अपने-अपने आंगनवाडी केंद्र को सुदृढ़ करने में सहायता मिली है। सेविका प्रशिक्षण के बाद सेविकाएं अपने केंद्र पर कविता कहानी गतिविधि को लयबद्ध करने लगीं जिससे बच्चों में काफी बदलाव आया और केंद्र की ओर उनका आकर्षण बढ़ा है। इसी तरह टीचिंग लर्निंग मटेरियल (TLM) का उपयोग केंद्र पर नाम मात्र का होता था वहीँ अब TLM का महत्त्व समझने के बाद TLM का उपयोग होने लगा। सेविकाएं, बच्चों का विकास कैसे हो, ये सोचने लगी हैं।

आइये जानिए हमारे कुछ प्यारे बच्चों के बारे में

नाम – अनन्या कुमारी

उम्र – 5 वर्ष

ग्राम – बंधू श्रीराम

आंगनवाडी केंद्र – फूलमाला देवी

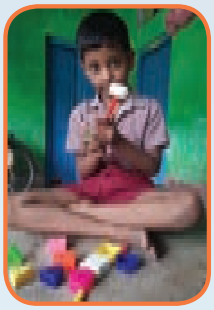

अनन्या कुमारी बालघर आँगन की नियमित छात्रा है। वह हमेशा साफ़ सुथरा रहती है। दिमाग से काफी तेज और चंचल अनन्या कभी भी अपने क्लास में अनुपस्थित नहीं होती है। एक दिन की बात है जब मै अपने विजिट के दौरान उसके केंद्र पर गयी तो उस दिन पर्व के कारण केंद्र पर बहुत कम बच्चे उपस्थित थे। पर जैसे ही अनन्या की नजर मुझपर पड़ी तो वह बहुत खुश हो गयी। वह अपने साथ कुछ बच्चों को लेकर गाँव में अन्य बच्चों को इकट्ठा करने के लिए निकली और देखते ही देखते उसने केंद्र पर बच्चों को इकट्ठा कर दिया। सिखायी गयी गतिविधियों को खुद से करने लगी और अन्य बच्चों को सिखाने भी लगी। वह नियमित अपने केंद्र के बच्चों को बालगीत, कविता आदि सिखाने लगी। मै आश्चर्य चकित थी कि इतनी छोटी सी बच्ची में इतने सारे गुण एकसाथ भी हो सकते हैं क्या ? उसमें नेतृत्व का गुण अभी से दिख रहा है। वह बच्चों के लिए एक उदहारण और प्रेरणास्त्रोत बन गयी है। कभी- कभी मेरे पास खुद से आकर बोलती है- मैडम जी वो वाली गतिविधि, कहानी कराईये ना ! केंद्र की सेविका भीउसकी काफी तारीफ करती है। उसके माता पिता भी काफी खुश हैं। उनका कहना हैं – “ये जब से परिवर्तन जाने लगी तब से इसमें काफी बदलाव आया है साथ ही साथ इसका दिमाग भी काफी तेज हुआ है। जैसे ही इसका आंगनवाड़ी का क्लास खतम हो जायेगा इसका नामांकन किसी अच्छे विद्यालय में करवा दिया जायेगा और इसे उच्च शिक्षा दी जाएगी।”

नाम – सुशांत सिंह

पिता का नाम – अनिल सिंह

उम्र – 4 वर्ष

ग्राम – नरेन्द्रपुर

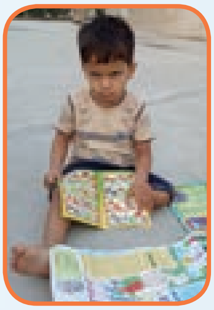

जब सुशांत पहली बार बालघर आँगन में क्लास के लिए अपनी फुआ के साथ आया, वह पहली बार घर से बाहर निकला था और ज्यादा बच्चों के साथ रहने की आदत नहीं थी उसे। इसलिए वह बच्चों के बीच बैठ नहीं रहा था, बार-बार दरवाजा खोलकर अपनी फुआ को आवाज लगा रहा था। मै बार-बार उसको बैठने के लिए आवाज लगा रही थी परन्तु लगता था कि वह मेरी बात सुन ही नहीं रहा है.। जब क्लास समाप्त होनेवाली थी तब मैंने सारे बच्चों को समूह गतिविधि करने को कहा और कहा –“ तुम सब चार-चार का ग्रुप बना लो।” सारे बच्चे ग्रुप बना के खेलने लगे लेकिन सुशांत एक जगह पर ही खड़ा रहा तब मै उससे बोली –“ तुम भी इस ग्रुप में बैठ जाओ,” पर वह चुप- चाप खड़ा ही रहा। मै फिर उससे बोली-“ सुशांत तुम भी इन बच्चो के साथ बैठ जाओ,” तब वह तोतला कर बोला- “मै इन बत्तो ते साथ नहीं थेलूँगा”। फिर मैंने उसे ब्लाक्स दिया और वह बलाक्स से रेलगाड़ी बनाकर खेलने लगा। मै वहीं बैठ गई और पूछा –“ क्या बना रहे हो?” तब वह बोला-“ मेरी बुआ मुझको गुड बाबू नहीं बोलती है, केवल बाबू को हर सामान खरीदती है।” मै उसके पीठ पर हाथ रख कर बोली-“ तुम बहुत अच्छे बाबू हो, मै तुम्हारे बुआ से बोलूंगी की सुशांत गुड बाबू है” तब वह बोला-“ ठीक है।” छुट्टी का समय हो गया था सभी बच्चे

गेट पर चले गए परन्तु सुशांत अपने बुआ को ही आवाज लगा रहा था और मुझसे बोला, मेरी छोटी बुआ को बुलाओ। कुछ समय बाद उसकी छोटी बुआ उसे लेने के लिए आ गई और मुझसे पूछी-" मैडम जी सुशांत बदमाशी तो नहीं किया था?" मै उसकी बुआ से बोली-" आप सुशांत को आज के बाद बदमाश मत बोलना, सुशांत अच्छा बच्चा है।"

अगले दिन सुशांत अपनी बुआ के साथ आया। वह क्लास में बच्चो की सभी गतिविधियां देख रहा था पर वह कुछ कर नहीं रहा था। इसी तरह उसकी बुआ रोज गेट पर छोड़ देती थी और शाम को गेट से ले जाती थी। इस तरह सुशांत रोज-रोज आने लगा। सुशांत को बालघर के बच्चे भी बहुत चाहने लगे, जिस दिन सुशांत बालघर नहीं आता था बच्चे पूछने लगते थे –" मैडम जी आज सुशांत क्यों नहीं आया।" इस तरह सुशांत बालघर का नियमित छात्र बन गया एवं सभी बच्चों में घुल मिल गया।

नाम – नंदनी कुमारी

उम्र – 5 वर्ष

पिता का नाम – अमित कुमार मांझी

ग्राम एवं पोस्ट – बडहुलिया

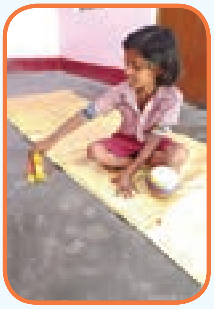

नंदनी अपने चार भाई बहन में सबसे छोटी है, बडहुलिया आंगनवाड़ी केन्द्र के पास ही रहती है। वह प्रतिदिन अपनी ड्रेस पहन के आती है। नंदनी जब अपने भाई सत्यम के साथ परिवर्तन आया करती थी, तो वह परिवर्तन बालघर आँगन में चारो तरफ देखा करती थी, किसी से कुछ नही बोलती थी और किसी के कुछ कह देने से वह अपने आपको शर्मिंदा महसूस करती थी। धीरे- धीरे वो काफी कुछ सीख गई। उसने बच्चों के साथ मिल कर रहना सीख लिया। जो भी गतिविधि करायी जाती थी, उसे बहुत ध्यान से सुनती, समझती और बहुत जल्द सीख लेती थी। वह परिवर्तन बालघर क्लास में होने वाली गतिविधि को अपने केंद्र के अन्य बच्चों के बीच कार्यशाला में पूरे हाव भाव से ऊंची आवाज में किया करती है। उसके भाव को देखकर सबलोग अत्यंत प्रसन्न होते हैं।

बदलाव के तरफ अग्रसर हमारी सेविकाएँ

सेविका का नाम – कु० बबिता पर्बत
आँगनवाड़ी केंद्र का नाम – बडहुलिया दक्षिण टोला (गड़बड़ा)
केंद्र का कोड – 150

सेविका बबिता पर्बत, प्रथम सेविका प्रशिक्षण शिविर 2015 में भागीदार थी। 2015 से ही उनका केंद्र परिवर्तन बालघर से जुड़ा। जब वह पहली बार सेविका प्रशक्षण के लिए परिवर्तन में आयीं तब ही परिवर्तन के बारे में उन्होनें अपनी समझ बनाई कि - परिवर्तन में क्या-क्या होता है। जब भी परिवर्तन परिसर में सेविका प्रशिक्षण होता है बबिता जी की उपस्थिति निश्चित रूप से रहती है। सेविका प्रशिक्षण के दौरान जो गतिविधियाँ होती हैं वह सीख कर अपने केंद्र पर बच्चों को अच्छे से सिखाने का प्रयास करती है। यदि कोई गतिविधि भूल जाती थीं तब फोन करके पूछती थीं। बबिता जी अपना केंद्र समय से एवं नियमित रूप से चलाती हैं। इनके केंद्र के बच्चे परिवर्तन के अन्य कार्यक्रमों में भी भाग लेते हैं, जैसे नन्हे कदम कार्यशाला, गुनगुन कार्यशाला एवं समर कैम्प। अपने समय का पालन करते हुए अपने केंद्र के बच्चों, अभिभावकों,

धात्री एवं गर्भवती महिलाओं के लिए पोषाहार का वितरण समय से करती है। इनके केंद्र पर बच्चों की संख्या औसतन अच्छी रहता है। जब उनके केंद्र के साथ परिवर्तन, बालघर क्लास करता है तब प्रत्येक दिन जब उनकी बारी आती है तब 5 बच्चों को नियमित रूप से भेजती हैं। उनके केंद्र के बच्चे बहुत एक्टिव होते हैं जो बालदिवस, 15 अगस्त, 26 जनवरी, के अवसर पर अपनी क्षमता अनुसार, बाल कविता, बालगीत को दर्शको के बीच प्रस्तुत करते हैं।

सेविका का नाम – फूलमाला देवी
आँगनवाड़ी केंद्र का नाम – बंथू श्रीराम
केंद्र का कोड – 13107

ये हैं फूलमाला देवी। अपने केंद्र की देख-रेख करना एवं कार्य प्रणाली का प्रभार संभालना फूलमाला देवी पर ही है। ये अपने कार्य को प्रतिदिन समय अनुसार पूरा कर लेती हैं। बच्चों के पोषाहार का भी उचित वितरण एवं बच्चो के लिए मेनू चार्ट के हिसाब से खाने की सामग्री तैयार कर दिया करती है। इनके केंद्र के बच्चे भी काफी जागरूक हैं। जो कुछ भी परिवर्तन से प्रतिदिन क्लास के जरिये सीख कर जाते हैं उसे अपने केंद्र की सेविका सहायिका तथा बच्चों के बीच अपनी भाषा में हाव भाव के साथ व्यक्त करते हैं जिससे अन्य बच्चों को भी सीखने का मौका मिलता है। सहायिका भी अपने स्तर से काफी सहयोग करती हैं जिससे आंगनवाड़ी सर्वे के दौरान इनके केंद्र की जो छोटो मोटी कमियां थी वे बिल्कुल ही दूर हो चुकी हैं। सेविका भी अपने केंद्र के प्रति क्या-क्या जिम्मेवारियां हैं एवं उसे कैसे पूरा करना है, उसे अपनी क्षमता एवं समझ के अनुसार उचित समय पर पूरा करती हैं, जिससे अभिभावक एवं बच्चे भी खुश रहते हैं।

वर्तमान समय में हमारे क्लास का स्वरुप

जब सम्पूर्ण देश के लोग करोना महामारी के कारण लाकडाउन में अपने-अपने घरों में कैद थे, सम्पूर्ण शिक्षण संस्थान आंगनवाड़ी केंद्र और सभी विद्यालय बंद पड़े थे, तब हमलोगों को एहसास हुआ कि इस समय बच्चो की शिक्षा की स्थिति क्या होगी? हमलोग जानते हैं कि 3 से 6 वर्ष तक के बच्चों में 85% विकास होता है, चाहे वह शारीरिक विकास हो या मानसिक विकास। इस स्थिती में लाकडाउन हो जाने से बच्चों की विकास पद्धति रुक न गई हो इसी चिंता में परिवर्तन बालघर आँगन द्वारा हमलोगों ने यथासंभव अभिभावक लोगों से सम्पर्क साधना शुरू किया। बातों ही बातों में बच्चो की वर्तमान स्थिती का अनुमान लगाने लगे, जिसमें यह पता चला कि बच्चे घर पर शरारत करते हैं और अभिभावकों की बातों की अनदेखी करते हैं। जब सेविका से बात की गयी तो पता चला कि सेविका लोगों का वर्तमान कार्य भी बच्चों के साथ न होकर पोषाहार तथा अन्य प्रशासनिक कार्यों में सीमित हो गया है। हमलोग सेविकाओं, सहायिकाओं, बच्चों एवं बच्चों के अभिभावकों को ऑनलाइन एवं विडियो के माध्यम से जोड़कर कविता, कहानी, बालगीत, व्यायाम, इत्यादि कराने लगे। ऑनलाइन एवं विडियो सत्र के माध्यम से विडियो बना कर साझा करने लगे। ताकि बच्चे एवं सेविकाएं अपने घर पर ही रहकर ही अभ्यास कर सकें। अभ्यास उपरांत सेविकाएं और अभिभावकगण भी बच्चों का विडियो बनाकर हमलोग से साझा करते आ रहे हैं। सेविकाओं से वर्तमान कार्य का विवरण भी लिया जा रहा है।

वर्तमान समय में बच्चों के छोटे -छोटे समूह बनाकर समुदाय में क्लास करायी जाती है। तथा आंगनवाड़ी केंद्र से भी बराबर सम्पर्क बनाते हुए आनलाइन क्लास हो रही है।

इस वर्ष के प्रमुख कार्यक्रम

- ऑनलाइन क्लास करवाना (बच्चों, सेविकाओं के लिए)
- सामुदायिक क्लास करवाना (छोटे-छोटे समूह में बच्चों के लिए)
- विडियो सत्र के माध्यम से बालगीत, कविता,कहानी, के विडियो बनाकर बच्चो तथा सेविकाओं के साथ साझा करना।
- अभिभावक के सुझाव एवं प्रतिक्रिया लेना।
- सेविकाओं द्वारा केंद्र के लिए शिक्षण सामग्री का निर्माण करना।

प्रशिक्षिका की कलम से

इस सत्र में कुल 7 पंचायतों में से 16 आँगनवाड़ी केन्द्रों के बच्चों को परिवर्तन में बुलाकर तथा 30 केन्द्रों पर जाकर क्लास करवाया गया। इस सत्र के सभी बच्चों की प्रतिभा अतुलनीय है! बच्चे काफी सक्रीय और अनुशासित रहे। इस बार क्लास लेने में जहाँ हमलोगों को बच्चों का साथ मिला वहीं मौसम के कारण बहुत सारी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा। इसी सत्र में अत्यधिक ठण्ड भी हुयी। इसके अतिरिक्त इस वर्ष विश्वव्यापी महामारी- करोना के कारण बहुत से बच्चे क्लास से वंचित रह गए। बच्चे अपने क्लास से वंचित ना हों और हमारा जुड़ाव उनसे बना रहे इसके लिए परिवर्तन कि तरफ से हमलोग समुदाय में क्लास कराके उन बच्चों तक अपनी पहुँच बनाने हेतु प्रयासरत रहे।

इसी तरह सही पोषण के लिए हमलोगों ने एक नये कार्यक्रम को अपने कामों से जोड़ा। वैसे ये काम हमलोगों से भिन्न नहीं है पर पोषण को ध्यान में रखते हुए उसकी रिपोर्ट तैयार कर सेविकाओं को जागरूक करना तथा पोषण के विभिन्न आयाम को समझाना नया काम था। काम मुश्किल जरुर थे पर नियमित प्रयास से हमलोगों ने बहुत से सकारात्मक रिजल्ट को प्राप्त किया और इस गतिविधि से नया अनुभव भी अर्जित किया। इस विशेषांक में हमारे द्वारा प्रमुख गतिविधियों का जिक्र किया गया है। उम्मीद करते हैं कि आप हमारे इस विशेषांक को पढ़ेंगे एवं अपनी प्रतिक्रिया भी देंगे। इसी आशा के साथ।

रिंकू कुमारी
फैसिलिटेटर
बालघर आँगन, परिवर्तन, नरेन्द्रपुर, सिवान